

आई विवाह पंचमी प्यारी अगहन रैन उज्यारी ॥
 गली गली रस सां है छाई धरणि आकाश पै वजी वाधाई
 नगारे नौबत की धुनि लाई फूली मिथिला सारी ॥
 जनक महल की शोभा सलोनी सम उपमा कोई है नहि होनी
 कोटि चन्द्र चांदिनि चमकोनी भयो नृत्य गीत रस भारी ॥
 ठंडिड़ी सुंगधि सो बहे समीरा दुल्हनि दूलह श्री सीय रघुवीरा
 साड़िही कुसौम्बी मुके सी नीरा भए अदभुत साज सींगारी ॥
 पुरवासिनि पंहिजा मन्दिर सजाया घर घर विराजिय सिय रघुराया
 रिम झिम रिमझिम मंगल गाया थी बरात जी सुन्दर सवारी ॥
 हाथियुनि ते हुयूं सोनियूं अम्बारियूं रत्न जटित जीनू घोड़नि धारियूं
 पट भूषण सां पालिकियूं संवारियूं तिनते वेठमि गुगल विहारी ॥
 जनक महल जूं उंचूं अटारियूं शोभा निहारिनि मिथिला जू नारियूं
 खील वर्षाइनि करे किलकारियूं थी जै जै धुनि चौधारी ॥
 स्वस्ति वाचन कनि द्विजदेवा तन्मय थी कनि सेवक सेवा
 द्रियनि प्रजा खे मंगल मेवा कनि आशीश उमंग उचारी ॥
 आतिशबाजी खूब जगाई हर्ष हुल्लास सां छुटी हवाई

दीप माला ज़णु घर घर आई भयो मंगल मोद बहारी ॥
साई अमां इहा शोभा निहारिनि अति अनुराग सां बचनि देखारिनि
युगल जोड़ी अ तां तन मन वारिनि कनि गद् गद् गीज गुंजारी ॥
अनेक किसिमनि बाजा बजाइनि घोड़ा तिनि ते तार मिलाइनि
देव विमाननि पुष्प वर्षाइनि जीओ रघुवर जनक दुलारी ॥
श्री जनक राज आयो अगवानी मिथिला पुर में थी महिमानी
ज़ार्जीं मार्जीं सभु खुशि खवानी खुलिया भोजन भण्डार अपारी ॥
राज महल में जशनड़ा थियड़ा कामिल मुरिशिद कुरिबड़ा कयड़ा
युगल जीत जा पासा पियड़ा थी हर हंधि आ हुबकारी ॥